गांधीजीके पावन प्रसंग

३

लेखक

लल्लुभाई मकनजी

अनुवादक

सोमेश्वर पुरोहित

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद - १४

प्रकाशकका निवेदन

१९४७ के बाद हमारा ध्यान समाज-शिक्षणकी ओर विशेष रूपसे गया है | और हमारे देशमें लोग ऐसी पुस्तकें तैयार करने लगे हैं, जो समाज-शिक्षणके कार्यमें उपयोगी सिद्ध हों | हमारी सरकारने भी इस कार्यके महत्त्वको समझकर इसे गति देनेके लिए अच्छी पुस्तकों पर लेखकोंको पारितोषिक देना आरंभ किया है | इससे समाज-शिक्षणका साहित्य तेजीसे बढ़ने लगा है |

नवजीवन ट्रस्टने आरंभसे ही इस कार्यका महत्त्व समझा है और इसमें यथाशक्ति सहयोग देनेके लिए समाज-शिक्षणकी पुस्तकें तैयार करवाई है | श्री जुगतरामभाई दवे तथा श्री नरहरिभाई परीखने मिलकर इसी हेतुके लिए बहुत पहले गुजरातीमें 'लोकपोथी' की रचना की थी | उसके बाद तो ऐसी अनेक उपयोगी पुस्तकें इस संस्थाने प्रकाशित की हैं | अनुभवसे यह सिद्ध हो चुका है की श्री लल्लुभाईकी पुस्तकें समाज-शिक्षणके लिए अच्छा काम दे सकती हैं | 'गांधीजीके पावन प्रसंग' शीर्षकसे उन्होंने जो पुस्तकें तैयार की हैं, उनमें यह तीसरी पुस्तक है | पहले और दुसरे भागकी तरह इस तीसरे भागमें भी उन्होंने गांधीजीके जीवनके विविध पहलुओंका दर्शन करानेवाले बोधप्रद प्रसंग सादी और सरल भाषामें चित्रित किये हैं | समाज-शिक्षण लेनेवाले प्रौढ़जनोंके सिवा बालकोंके लिए भी ये पुस्तकें उपयोगी साबित हुई हैं | इस पुस्तकमालाकी पहली पुस्तकको बाल-साहित्यके जीवन-चरित्र विभागकी उत्तम पुस्तक घोषित करके बम्बई-सरकारने लेखकको प्रथम पारितोषिक प्रदान किया है | यह बात इस मालाकी उपयोगिताको भलीभांति सिद्ध कर देती है |

गुजरातीसे हिन्दी अनुवाद हमारे हिन्दी-विभागके श्री सोमेश्वर पुरोहितने किया है |

आशा है समाज-शिक्षण लेनेवाले प्रौढ़जनों और बालकोंके लिए यह पुस्तक भी लाभदायी साबित होगी|

१५-३-१९६०

अनुक्रमणिका

प्रकाशकका निवेदन

१. प्रेमका जादू

२. एक चालाक मुवक्किल

३. चोरके लिए नाश्ता

४. 'आजसे घूंघट हटाता हूं'

५. वीरको शोभा देनेवाली मृत्यु

६. नमक ही खारापन छोड़ दे तो?

७. गरमीमें ही मुझे पिघलने दीजिये

८. सार्वजानिक व्यवहारके नियम

९. सेवाग्राममें गांधी-जयन्ती

१०. वे भव्य वचन

११. यह शरीर लोकसेवाके लिए है

१२. पोशाकमें क्रान्ति

१
प्रेमका जादू

देशकी स्वतंत्रताके लिए गांधीजीने ब्रिटिश हुकूमतके साथ जैसी सख्त लड़ाईयां लड़ीं, वैसी और किसी नेताने नहीं लड़ीं | ब्रिटिश सरकारको 'शैतानी सरकार' कहनेवाले गांधीजीके मनमें हरएक अंग्रेजके लिए प्रेम भरा था | गांधीजी अधर्मका विरोध करते थे, अधर्मी मनुष्यका नहीं | क्योंकि अधर्मीके लिए जीवनमें परिवर्तन – सुधार करनेकी गुंजाईश रहती है | गांधीजीके जीवनकी विशेषता ही इस बातमें थी कि जिसके खिलाफ वे लड़ाई छेड़ते थे, उस पर भी अपना प्रेम बरसाये बिना रह ही नहीं सकते थे | जनरल स्मट्स जैसे शक्तिशाली विरोधीको भी उन्होंने अपने ऐसे ही प्रेमसे जीत लिया था | भारतमें जब राजद्रोहके अपराधमें उन्हें ६ वर्षकी जेलकी सजा हुई, तब सजा देनेवाले न्यायाधीश भी यह कहे बिना नहीं रह सके: "भारतका राजनीतिक वातावरण बदल जाने पर यह सजा पूरी किये बिना ही आप जेलसे रिहा कर दिए जायें, तो मुझसे ज्यादा आनन्द और किसीको नहीं होगा |" दुनियाके मशहूर मुकदमोंके इतिहासमें ऐसा एक भी उदाहरण देखनेको नहीं मिलता, जिसमें अपराधीको सजा देते समय न्यायाधीशने ऐसे वचन कहे हों | ब्रिटिश सम्राटके एक अधिकारीके नाते न्यायाधीशने अपना फर्ज़ तो अदा किया, परन्तु गांधीजीके लिए उनके मनमें जो आदर था उसे वे छिपा न सके |

जेलमें भी जेलके अधिकारियोंकी यही हालत थी | गांधीजीके समान एक सन्त पुरुषके वे जेलर हैं, यह बात उनके मनमें खटकती थी | गांधीजीकी अंतिम जेलयात्राका समय आगाखान महलमें बीता था | उन दिनों श्री कटेली जेल-सुपरिन्टेन्डन्ट थे | गांधीजी दो बरससे कुछ अधिक समय तक आगाखान महलमें बन्द रहे | उस बीच श्री कटेली गांधीजीके जेल-परिवारके एक सदस्य जैसे बन गये थे | जब गांधीजीको रिहा कर देनेका हुक्म उन्हें मिला, उस समय उनके मनकी क्या दशा हुई होगी ? कैसे कैसे भाव उनके हृदयमें उठे होंगे? छुटनेके बाद गांधीजीकी ७५वीं जन्म-जयन्ती आनेवाली थी | सरकारी नौकरीके बन्धनोंके कारण श्री कटेली जयन्ती उत्सवमें भाग नहीं ले सकते थे | परन्तु उनका दिल तो यह जयन्ती मनानेके लिए बड़ा उत्सुक था | उन्होंने ७५ वीं जयन्तीके अवसर पर ७५ रुपयेकी एक छोटीसी थैली गांधीजीको अर्पण करनेका निश्चय किया|

गांधीजीके पास आकर वे बोले : "कल सवेरे जब आप इस महलसे बिदा होंगे, तब सम्राटके एक नौकरका फर्ज़ अदा करनेके लिए मैं अपने गणवेशमें खड़ा रहूंगा | इस कारणसे मैं अभी आपके आशीर्वाद लेने आया हूं |"

महात्माजी एक कैदीके रूपमें जेल- सुपरिन्टेन्डन्टके यह वचन सुन रहे थे | वे कुछ बोलें इसके पहले ही जेल- सुपरिन्टेन्डन्टने आगे कहा : "महात्माजी, बाहर जाने पर तो आपको अनेक थैलियां अर्पण की जायेंगी| परन्तु कटेलीकी इस छोटीसी थैलीको स्वीकार करके आप इसे पहली थैली बननेका मौका दीजिये |"

गांधीजीने हंसते हंसते उनकी थैली स्वीकार की | एक जेल-अधिकारी अपने कैदीका ऐसा सम्मान करे, यह घटना भी क्या दुनियाके इतिहासमें अनोखी नहीं कही जाएगी ?

गांधीजीको आगाखान महलसे बिदा करनेके लिए अनेक लोग आये थे | उनमें जेल- सुपरिन्टेन्डन्टकी पत्नी भी थी | बिदाके समय गांधीजीको प्रणाम करके श्रीमती कटेली बोलीं : "महात्माजी, भविष्यमें आप फिरसे जेल जानेका विचार करें, तो कृपया पहलेसे ही हमें सूचना कर दीजियेगा, जिससे मेरे पति नौकरीसे छुट्टी ले लें |"

गांधीजीके जेलवासके अरसेमें उनके पति जेल-सुपरिन्टेन्डन्ट रहें, इस विचारसे ही श्रीमती कटेलीको लज्जा आती थी|

संतके प्रेमका जादू कैसा अनोखा था ? विरोधी हुकूमतके नौकर और उनके परिवारके लोग भी गांधीजीके अपने आदमी बन गये थे !

२

एक चालाक मुवक्किल

श्री हेनरी पोलाक गांधीजीके मित्र, भक्त और दक्षिण अफ्रीकाके एक साथी थे | स्वावलम्बी जीवनके नए नए प्रयोगोंमें भी वे गांधीजीके साथ ही रहते थे | दक्षिण अफ्रीकामें गांधीजी जब वकालत करते थे, तब श्री पोलाक भी कुछ समय उनके दफ्तरमें काम करनेके लिए रहे थे | उनका खास काम आमद-खर्चका हिसाब रखना था | यह काम तो वे अत्यन्त सावधानीसे करते ही थे, परन्तु गांधीजीके मुवक्किलोंसे पैसे वसूल करनेका काम भी वे बड़ी कुशलतासे करते थे |

एक बार गांधीजीका एक चालक मुवक्किलसे साबका पड़ गया | उसके वकीलका काम करते करते एक बड़ी रकम गांधीजीकी उस पर चढ़ गयी | परन्तु हिसाब श्री पोलाक रखते थे, इसलिए गांधीजीने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि मुवक्किल पर उनकी कितनी रकम चढ़ गयी है | श्री पोलाकने बार बार उससे पैसोंका तकाजा किया, परन्तु एक या दूसरा बहाना बनाकर वह पैसे देनेमें आनाकानी करता रहा | अब श्री पोलाकका धीरज खूटने लगा | वे परेशान हो गये | समझाने-बुझानेसे यह मामला निबटेगा, ऐसा उन्हें लगता नहीं था | गांधीजीके साथ भी बेईमानी करनेवाले मुवक्किलको अब कोर्टमें घसीटनेका आखिरी रास्ता लेनेका उन्होंने विचार किया | इसके लिए उन्होंने एक नोटिस तैयार किया | उसमें मुवक्किलको बताया कि : "बार बार तकाजा करने पर भी आपने पैसे देनेमें आनाकानी की है | अब अगर आप पैसोंकी अदायगी नहीं करेंगे, तो अदालतमें आप पर दावा किया जायेगा |"

अन्तमें गांधीजीके सामने सही करनेके लिए वह नोटिस रखा गया | मुवक्किलको दावेकी धमकी देनेवाला नोटिस पढ़कर गांधीजीको हंसी आ गयी | उस पर अपनी सही न करके गांधीजीने उसे टेबल पर एक ओर रख दिया |

श्री पोलाक खड़े खड़े यह सब देखते रहे | अन्तमें वे बोले : "दावा न किया गया तो पैसे वसूल होना कठिन है |"

गांधीजी – तो हम पैसे छोड़ देंगे | लेकिन दावा नहीं करेंगे |

श्री पोलाक – लेकिन दावा करनेमें हर्ज क्या है ? पैसे वसूल करनेके लिए तो आप कई मुवक्किलोंके मुक़दमे लढ़ चुके हैं |

गांधीजी – मुवक्किलोंके कहनेसे उनकी ओरसे मैं भले कुछ भी करूं | लेकिन क्या आप अभी भी नहीं जानते की अपने पैसे वसूल करनेके लिए मैं कभी कानूनका सहारा नहीं लेता? धमकी देकर या जोर-ज़बरदस्तीका सहारा लेकर मनुष्यको कभी ईमानदार नहीं बनाया जा सकता | मुवक्किलने अपनी इच्छासे मेरी फीस न दी, तो मुझे उसी समय उससे फीस वसूल कर लेनी चाहिए थी | इसमें मैंने जो गलती और असावधानी की उसका फल मुझे भोगना ही होगा |

श्री पोलाक चुपचाप गांधीजीकी बातें सुनते रहे | वह नोटिस आखिर कचरे की टोकरीमें गया और गांधीजी दूसरे कागज़-पत्र पढ़नेमें मशगूल हो गये |

दफ्तरसे बाहर निकलते समय गांधीजीका यह वाक्य श्री पोलाकके मनमें गूंजने लगा : "धमकी या जोर-ज़बरदस्तीसे मनुष्यको कभी ईमानदार नहीं बनाया जा सकता |"

उनका हृदय गवाही दे रहा था : "कभी नहीं |"

३
चोरके लिए नाश्ता !

अपने उपकारी पर प्रेम रखनेवाले तथा उसका भला करनेवाले लोग तो संसारमें बहुतेरे देखे जाते हैं | परन्तु अपना अपकार करनेवालेका भी भला चाहनेवाले तथा उस पर उपकार करनेवाले आदमी दुनियामें इनेगिने ही होते हैं | गांधीजी संसारके ऐसे ही बिरले महापुरुष थे |

दक्षिण अफ्रीकामें अपने ऊपर हमला करनेवाले मीर आलमको क्षमा करके उस पर मुकदमा न चलानेका आग्रह गांधीजीने रखा था | अपनी मृत्युसे कुछ दिन पहले दिल्लीमें प्रार्थना-सभाके नजदीक बम फोड़नेवालेके बारेमें भी गांधीजीने प्रेमके ही वचन निकाले थे | वे हमेशा कहा करते थे कि "मनुष्यमात्रके प्रति – बुरे और भलेके प्रति, धर्मी और अधर्मीके प्रति प्रेमका व हमदर्दीका भाव रखना चाहिए | परन्तु अधर्मके प्रति कभी ऐसा भाव नहीं रखना चाहिए |" अधर्मका तो गांधीजीने जीवनभर विरोध किया था |

"अपकारका बदला अपकार नहीं, लेकिन उपकार ही हो सकता है" – यह सिद्धान्त गांधीजीका जीवन-मंत्र बन गया था | एक रातको आश्रमके रसोईघरमें एक चोर घुस गया | वह भूखा होनेके कारण रसोईघरमें घुसा या दुसरे किसी कारणसे, यह किसीको समझमें नहीं आया | परन्तु कुछ आश्रमवासियोंने उसे पकड़ लिया और एक कोठरीमें बंद कर दिया | उनका विचार उसे सवेरे गांधीजीके सामने ले जाना था |

सवेरे नित्य कर्मोसे निबट कर गांधीजी नाश्ता करने बैठे, तब उस चोरको उनके सामने पेश किया गया | किन परिस्थितियोंमें चोरको पकड़ा गया, इसका सारा किस्सा उन्हें सुनाया गया | गांधीजीने चुपचाप सब कुछ सुन लिया | अन्तमें वे बोले :

"इस भाईको नाश्ता कराया या नहीं ?"

आश्रमवासी – नहीं बापू |

गांधीजी – पहले इसे नाश्ता कराओ; फिर मेरे पास लाना |

पास ही खड़े कुछ भाई मनमें गुनगुनाये : "अरे, चोरको नाश्ता !"

चोर भी मनुष्य है ; उसे भी भूख लगी होगी; जो आदमी हमारे बन्धनमें हो, उसे खाना खिलाना हमारा धर्म है; ऐसी ऊंची कल्पना उनके मनमें उठी ही नहीं थी | परन्तु एक चोरके प्रति भी गांधीजीका ऐसा मानव-धर्म देखकर आश्रमवासीयोंको प्रेमधर्मकी अनोखी दीक्षा मिली |

चोरको नाश्ता कराया गया | बादमें उसे दुबारा गांधीजीके पास लाया गया | गांधीजीने उसे प्रेमसे समझाया : "भाई, तुम्हें इस तरह चोरी नहीं करनी चाहिए | चोरी करना पाप है | गरीबीके कारण अगर तुम्हें चोरी करनी पड़ती हो, तो हम तुम्हें आश्रममें काम देंगे |"

विश्वके एक वन्दनीय महात्मा चोरका न्याय कर रहे थे | चोरके मनमें उस समय कैसे भाव उठ रहे होंगे ?

अन्तमें गांधीजीने हुक्म दिया कि चोरको पुलिसके हवाले न करके उसे छोड़ दिया जाय | चोरको बड़ा अचरच हुआ | उसे इस बातका भान हुआ कि वह किसके यहां चोरी करने आया है | चोरी न करनेका गांधीजीका उपदेश सुनकर वह आश्रमसे चला गया |

समाजमें जिसने चोरीको अपना कर्तव्य माना है, उसकी चोरीको सह लेना, उसके मनमें यह भावना पैदा करना कि वह हमारा भाई है और उसके जीवनको बदलना यही प्रेमका मार्ग है | गांधीजी ऐसे प्रेममार्ग पर जीवनभर चले और उसीमें उन्होंने अपने जीवनकी धन्यता मानी |

४

'आजसे घूंघट हटाता हूं'

इस घटनाके समय गांधीजी सेवाग्राममें रहते थे | घूमनेकी कसरत उन्हें बहुत प्रिय थी | इसलिए वे सुबह-शाम बिना चूके घूमने जाते थे | उनके साथ आश्रमके भी कुछ लोग रहते ही थे | कभी कभी बालक भी इस मंडलीमें शामिल हो जाते थे |

एक दिन अपने नियमके मुताबिक गांधीजी शामको घूमने निकले | रास्तेमें एक धनी व्यापारी गांधीजीसे मिलनेकी इच्छासे खड़े थे | परन्तु वे समझ नहीं पा रहे थे कि किस तरह मिला जाय | गांधीजी तेज चालसे चलते चलते उनके पाससे गुजर गये | उनके पीछे कुछ आश्रमवासी चल रहे थे | वे व्यापारी सज्जन भी आश्रमवासियोंके साथ गांधीजीके पीछे पीछे चलने लगे | गांधीजीकी मंडलीमें नए शामिल होनेवाले व्यापारी मित्रकी ओर एक भाईने स्वाभाविक कुतूहलसे देखा | उनका ध्यान अपनी ओर खिंचा देखकर व्यापारी मित्रने कहा : "कुछ ही दिन पहले मेरे पुत्रका विवाह हुआ है | मेरी और मेरी पत्नीकी इच्छा है कि हमारा पुत्र और पुत्रवधू गांधीजीके चरणोंमें प्रणाम करें और गांधीजी उन्हें आशीर्वाद दें | इसके लिए गांधीजी कुछ मिनटका समय दें तो हमारा अहोभाग्य होगा |"

आश्रमवासीने उन्हें सलाह दी कि "बापूजी कल सवेरे इसी रास्ते पर घूमने निकलेंगे | उस समय आप दोनों वर-वधूको साथ ले आईये | बापूजी आपसे जरूर मिलेंगे |"

व्यापारी – लेकिन गांधीजी रास्ते पर मिलनेका समय देंगे भी ?

आश्रमवासी – जरूर देंगे | आप दोनोंको लेकर सुबह यहीं आ जाईये |

व्यापारी – गांधीजी नाराज तो नहीं होंगे न ?

आश्रमवासी – शायद हममें से कोई नाराज हो जाय; परन्तु बापूजी कभी नाराज नहीं होते |

व्यापारी – तब तो मैं कल सवेरे जरूर दोनोंको लेकर आ जाऊँगा |

हमारी मनकी इच्छा पूरी होगी, ऐसे संतोषके साथ वे अपने गांवको लौट गये | रातको घरके सब लोगोंको यह बात सुनायी और सवेरे जल्दी उठनेकी सूचना देकर सो गये | कब रात बीते और कब सवेरा हो, यही विचार उनके मनमें घुटता रहा | वे अधीर हो उठे | अच्छी तरह सो भी नहीं सके | सुबह सब लोग जल्दी तैयार हो गये | दोनों व्यापारी पति-पत्नी, उनका पुत्र और पुत्रवधू सब सेवाग्राम जानेको निकल पड़े | और नियत किये हुए स्थान पर जाकर आतुरतासे गांधीजीके आनेकी राह देखने लगे |

पक्षीगण जाग उठे थे | आसपासके वृक्षों पर उनका मधुर कलरव सुनायी पड़ता था | उषाके सुनहले रंगसे पूर्व दिशा चमक उठी थी | दूरसे महात्माजीकी खिलखिलाहटकी आवाज सुनायी दे रही थी | समूची सृष्टि मानो आनन्द और उल्लाससे भर गयी थी | करोड़ोंके तारनहार महात्मा तेज चालसे चले आ रहे थे |

" देखो, महात्माजी आ रहे हैं | तुरंत उनके चरणोंमें दोनों प्रणाम करना |" भक्तिभावसे व्यापारीने वर-वधूसे कहा |

गांधीजी घूमते घूमते उस स्थान पर आ पहुंचे | व्यापारी पति-पत्नीने भक्तिसे उन्हें प्रणाम किया | वर-वधूने उनके पवित्र चरणोंमें मस्तक नवाया | दोनोंकी पीठ पर सन्त पुरुषने वरद हस्त फेरकर उन्हें आशीर्वाद दिया और प्रेमसे उन्हें खड़ा किया | माता-पिता इस पवित्र दृश्यको एकटक देखते रहे | हृदयकी प्रसन्नता और आनन्द उनके मुख पर झलक उठे |

गांधीजी शांत खड़े रहे | उनके मुख पर गंभीरता छा गयी | आंखोंमें करुणाका भाव था | वाणी बंद थी | पुत्रवधूकी ओर वे कुछ क्षण तक देखते रहे | उसने घूंघटके भीतर अपना चेहरा छिपा लिया था | नीचे झुकाये हुए चेहरेको ऊंचा उठाकर वह उपरकी ओर देख नहीं सकती थी | आंखें होते हुए भी वह अंधी बनी हुई थी | रिवाजकी गुलामीसे वह ऐसी जकड़ी हुई थी कि गांधीजी जैसे सन्त पुरुषको भी अपना मुंह नहीं दिखा सकती थी | भारतको गुलामीके बन्धनसे मुक्त करनेवाले गांधीजीसे रिवाजकी यह गुलामी कैसे सही जाती ? नारीकी पवित्रताकी रक्षा क्या घूंघटसे कभी हो सकती है ? स्वतंत्रताकी सुख देनेवाली हवामें ही उस पवित्रताका विकास हो सकता है |

करुणा-सागर गांधीजी उस पुत्रवधूके पास गये और उसके मुंह परका घूंघट उन्होंने हटा दिया | फिर उसके ससुरकी ओर देखकर वे गंभीर वाणीमें बोले : "इस बालाके मुंह परका घूंघट मैं आजसे हटाता हूं | इसका मुंह हमेशा ऐसा ही प्रसन्न रहने दीजिये | दुबारा इसके मुंह पर घूंघट न चढ़े, इसकी सावधानी रखना आपका काम है |"

"जैसी आपकी आज्ञा, महात्माजी | आपकी आज्ञाके खिलाफ मैं काम नहीं करूंगा | वर-वधू दोनों पर आपके आशीर्वाद बरसाइये |" बालाके ससुरने प्रणाम करके गांधीजीको विश्वास दिलाया |

गांधीजी – अच्छे काम पर भगवानके आशीर्वाद हमेशा बरसते ही हैं |

" जा, प्रसन्नतासे रहना" – कहकर गांधीजीने बालाकी पीठ पर प्रेमकी एक मीठी चपत लगाई और तेजीसे आगे बढ़ गये |

भारतको आजादी दिलानेवाले गांधीजी इस बातके लिए सदा उत्सुक रहते थे कि देशके हर आदमीका जीवन स्वतंत्रताके आधार पर विकसित हो | वह बाला बड़ी खुशनसीब थी कि बरसों पुराने रिवाजकी गुलामीको तोड़ कर गांधीजीने उसके जीवनमें क्रांति पैदा कर दी | न जाने कितने अज्ञात मनुष्योंके जीवनमें गांधीजीने अनेक प्रकारसे ऐसी क्रांति पैदा की होगी |

५

वीरको शोभा देनेवाली मृत्यु

१९३३ में गांधीजी यरवडा जेलमें थे | जेलमें रहते हुए अस्पृशता-निवारणका कार्य करनेके लिए गांधीजीने जो सुविधायें मांगीं, उन्हें देनेसे सरकारने इनकार कर दिया | गांधीजी इस बातको बरदाश्त नहीं कर सके | इसलिए उनहोंने उपवास शुरु कर दिया | लेकिन इस उपवासमें पांच ही दिनमें गांधीजीकी तबीयत कल्पनासे ज्यादा बिगड़ गयी | इसलिए सरकार गांधीजीको जेलसे हटाकर पूनाके सासून अस्पतालमें ले गयी | लेकिन सरकार झुकना नहीं चाहती थी | इसलिए उसने भी कड़ा रुख अपनाया | यहां तक कि कस्तूरबाको भी गांधीजीसे स्वतंत्रताके साथ मिलनेकी इजाजत नहीं दी | अस्पतालमें आनेके बाद गांधीजीकी तबीयत ज्यादा नाजुक हो गयी | सरकारको यह डर लगा कि अधिक समय तक गांधीजीको कैदमें रखनेसे कहीं उनके प्राणोंके लिए खतरा न पैदा हो जाय | कैदीके रूपमें गांधीजीकी मृत्यु हो जानेसे जो खतरा पैदा हो सकता था, उसका सामना करनेकी हिम्मत सरकारमें नहीं थी | इसलिए उसने गांधीजीको बिनाशर्त छोड़ दिया | सासून अस्पतालसे गांधीजीको लेडी ठाकरसीकी 'पर्णकुटी' में ले जाया गया | वहां आराम लेनेसे उनकी तबीयतमें सुधार हो रहा था |

एक दिन गांधीजी 'पर्णकुटी' के सुंदर बागमें शामको घूम रहे थे | कुछ साथी भी उनके साथ घूम रहे थे | गांधीजीके मनमें यह मन्थन चल रहा था कि इस अनसोचे छुटकारेके बाद अब क्या किया जाय | बातचीतके सिलसिलेमें उन्होंने एक साथीसे कहा : " मेरा यह विश्वास नहीं था कि इस बार मुझे रिहा कर दिया जायगा | मैं तो ऐसा मानता था कि इस बार जेलमें ही कैदीके रूपमें सरकार मुझे मर जाने देगी | इसलिए मैंने जेलमें मरनेकी पूरी मानसिक तैयारी कर ली थी | छूटनेसे एक दिन पहले ही मैंने अपने उपयोगकी सारी चीजें अस्पतालकी नर्सों और दुसरे लोगोंको दे दी थी |"

ये सब चीजें बांट देनेके बाद रामनाम रटते रटते गांधीजी चादर ओढ़कर सो गये थे | मृत्युके लिए उनके मनमें जरा भी घबराहट नहीं थी, न कोई दुःख ही था | वह शांति और धीरजसे खुशी खुशी मृत्युका आलिंगन करनेकी अनोखी तैयारी थी |

उपवाससे जेलमें ही मेरी मृत्यु हो जाती तो लोग क्या सोचते, ऐसा सवाल गांधीजीने बातचीतके दौरानमें एक साथीसे पूछा |

साथी – बापू, वह तो आपकी उदात्त और भव्य मृत्यु मानी जाती |

"नहीं, नहीं, यह बेकारकी बात है | उपवाससे होनेवाली मृत्युको भव्य मृत्यु कौन कहेगा ? उसमें क्या यश और क्या भव्यता है ? परन्तु तुम मेरी जन्म-कुंडलीमें लिखी बात जानते हो ? उसमें लिखा है कि वीरोंको शोभा दे ऐसी मृत्यु मुझे मिलेगी |" कहते कहते गांधीजीने जोरका ठहाका लगाया |

साथी – बापू, उपवाससे होनेवाली मृत्यु वीरको शोभा देनेवाली ही कही जाएगी | धीरे धीरे मृत्युकी शरणमें जाना क्या कोई आसान बात है ? इसके लिए कितने बड़े आत्मबलकी जरूरत होती है ?

गांधीजी – नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता | मेरी मृत्यु फांसीके तख्ते पर होनी चाहिए या पिस्तौलकी गोलीसे होनी चाहिए | ऐसा ही मृत्यु सच्चे अर्थमें वीरोंको शोभा देनेवाली मृत्यु है | खटियामें पड़े पड़े उपवाससे मरना वीरकी मृत्यु नहीं है |

अपनी मृत्युके बारेमें गांधीजीकी यह कैसी अनोखी क्रान्तिकारी कल्पना थी | उनकी जीवन-दृष्टि बड़ी सूक्ष्म और गहरी थी | उन्होंने अपनी वाणी द्वारा जीवनके सदा बने रहनेवाले मूल्योंका परिचय भारतको और सारे जगतको कराया | लेकिन इतिहास फिरसे दोहराया गया | वर्तमान युगके एक श्रेष्ठ मानवका जीवन-सन्देश समझ न सकनेवले एक पागल मनुष्यकी गोलीसे बापूके जीवनका अन्त आया | दुनिया अपने युगके देवदूतको – सन्त पुरुषको पहचान न सकी, यह कितने बड़े दुःखकी बात है | कुदरतके बड़ेसे बड़े अनार्थोंसे मानवके हृदयको जो आघात लगता है, उससे भी ज्यादा गहरा आघात गांधीजीकी मृत्युके समाचार सुनकर भारतके और सारे जगतके करोड़ों लोगोंके हृदयोंको लगा था | सारी दुनिया शोक-सागरमें डूब गयी थी | अजात-शत्रुकी, अहिंसाके दूतकी मृत्यु गोलीसे | यह एक ऐसी घटना थी जिसकी कोई कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था | परन्तु गांधीजीकी दृष्टिसे तो वह वीरोंको शोभा देनेवाली मृत्यु थी |

६

नमक ही खारापन छोड़ दे तो ?

मनुष्यके जीवनको गढ़नेके लिए, उसको शुद्ध बनानेके लिए व्रतोंके पालनकी बड़ी जरूरत रहती है | इसलिए गांधीजी अपने आश्रममें सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह आदि ग्यारा व्रतोंके पालनका आग्रह रखते थे | इन सब व्रतोंमें उन्होंने स्वदेशीके व्रतको इस युगका महाव्रत माना था |

वह कौनसा स्वदेशी धर्म है, जिसके थोड़े भी पालनसे भारतके करोड़ों लोगोंकी रक्षा हो सकती है ? यही सवाल गांधीजीको परेशान कर रहा था | परन्तु अन्तमें इस सवालका जवाब उन्हें मिल गया – चरखा |

तभीसे गांधीजीने चरखेको अपनाया और नियमसे कातनेका व्रत लिया | किसी दिन भोजनके बिना तो चल सकता है, परन्तु कताईके बिना नहीं चल सकता – ऐसी भक्ति, लगन तथा उत्साहसे वे चरखा चलाते थे | चरखेमें वे इतने एकरूप और समरस हो जाते थे कि अपनेको भूल जाते थे | उनके मनकी सबसे बड़ी अभिलाषा थी : चरखा चलाते चलाते किसी दिन मेरी आंखें बन्द हो जायं, तो वह मेरे जीवनकी सबसे बड़ी धन्यता होगी | भले ही बड़ेसे बड़े महत्त्वके काम हों – कांग्रेस महासमितिकी बैठकमें हाजिर रहना हो, वाइसरॉयके साथ सलाह-मशविरा करना हो, नेतागण सलाह-सूचना और मार्गदर्शन लेने आये हों, बीमारोंकी सेवा करनी हो, 'नवजीवन' या 'हरिजन' के लिए लेख लिखने हों या देशके गंभीर सवालों पर विचार करना हो – लेकिन गांधीजी एक दिन भी चरखा चलाना नहीं छोड़ते थे |

चरखेमें ऐसी अटल श्रद्धा होनेके कारण ही उन्होंने राष्ट्रके सामने बुलन्द आवाजमें यह घोषणा की थी कि चरखेको अगर सारे देशवासी अपनायेंगे, तो सूतके धागेसे ही हिंदुस्तानको स्वराज्य मिल जायगा | कोई पूछ सकते हैं कि स्वराज्य हासिल करनेके लिए तो हिंसक लड़ाईयां लड़नी पड़ती हैं, हजारोंका खून बहाना पड़ता है, जब कि गांधीजीने तो देशके सामने बूढ़ीमांका चरखा ही पेश किया था | लेकिन चरखा चलाना कोई मामूली और आसान बात नहीं थी | गांधीजीकी दृष्टिमें चरखा चलाने अर्थ था 'खादीके मानस' का विकास करना | चरखेका कार्यक्रम जीवनके मौजूदा मूल्योंको बदलनेका कार्यक्रम था | 'खादीके मानस' का विकास करनेका अर्थ है गरीबोंके साथ तन्मय – एकरस होनेकी, प्रत्येक मनुष्यके साथ समानताका व्यवहार करनेकी, किसीका शोषण न करनेकी, शून्यवत् बनकर सेवामय और कर्तव्य-निष्ठ जीवन बितानेकी तथा अन्यायका विरोध करनेके लिए सिर ऊंचा रखकर जीनेकी भावनाका विकास करना | परन्तु गांधीजी जो कुछ कहते थे उस पर स्वयं अमल भी करते थे | जो काम वे खुद नहीं कर सकते थे, उसे करनेकी सलाह वे राष्ट्रको कभी नहीं देते थे |

मुसाफिरीमें भी गांधीजी चरखा और पूनियां अपने साथ ही रखते थे और कमसे कम तारोंकी जो संख्या उन्होंने तय कर ली थी, उतने तार काटे बिना कभी सोते नहीं थे | ऐसा अनोखा और अटल था उनका कताई-व्रत !

एक बार वे भारतके कुछ हिस्सोंकी यात्राके लिए निकले | घूमते घूमते वे पुना पहुंचे | रातमें कातने बैठे तो देखा कि पूनियां ख़तम हो गयी हैं | अपने सामानमें से पूनियां निकाल देनेकी उन्होंने एक साथीको आज्ञा दी | परन्तु सामानमें भी पूनियां नहीं मिलीं | उनके साथियोंमें से जिनके जिम्मे यह काम था, वे सामानके साथ ज्यादा पूनियां रखना भूल गये थे | अब क्या किया जाय? महादेवभाई नियमसे चरखा चलाते थे | उन्हें बुलाकर गांधीजीने पूछा : "महादेव, तुम्हारे पास तो पूनियां रहती ही हैं | थोड़ी पूनियां मुझे दो |"

महादेवभाई के पास पूनियां नहीं थीं, इसलिए वे गांधीजीकी बात सुनकर परेशानीमें पड़ गये | कुछ क्षण रुक कर वे बोले : "बापू , आज तो मेरे पास नहीं हैं | फैजपुरमें जरूर थीं |"

गांधीजी – क्या तुमने ऐसा मान लिया था कि फैजपुरमें कातनेका समय मिलेगा और यात्रामें नहीं मिलेगा?

महादेवभाई – नहीं बापू, ऐसा तो नहीं माना था | परन्तु बहुत बार सामान बढ़ जानेकी वजहसे मैं चरखा-पूनी साथमें नहीं लेता | कातनेमें मुझे आलस नहीं लगता, बल्कि मुझे कातनेका शौक है | कामके बोझसे थक जाता हूं तब थकान उतारनेके लिए मैं बहुत बार कताई करता हूं | जेलमें एक दिन भी ऐसा नहीं गया जब मैंने कताई न की हो | परन्तु बाहर यात्रामें मैं लाचार बन जाता हूं |

इस जवाबसे गांधीजीको संतोष नहीं हुआ | महादेवभाई अपनी इस लापरवाहीके लिए शरमिन्दा हो गये | गांधीजीकी आंखसे आंख मिलानेके उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी | मुंह नीचा किये वे गांधीजीके सामने अपराधीकी तरह खड़े रहे |

परन्तु गांधीजीके मनमें एक विश्वास था | उनकी यह श्रद्धा थी कि इतने बड़े पूना शहरमें, जहां जाने-माने रचनात्मक कार्यकर्ताओंका बड़ा दल काम करता है, पूनियां जरूर मिल जायेंगी | इसलिए ज्यादा दुःख प्रकट किये बिना वे चुपचाप सो गये |

दूसरे दिन उन्होंने पूनियोंकी खोज करवाई | लेकिन पूनियां नहीं मिलीं | इसका अर्थ यह था कि कोई रचनात्मक कार्यकर्ता नियमसे कताई नहीं करता था | मेरे लेखोंको दिलचस्पीसे पढ़नेवाले और उनका प्रचार करनेवाले मेरे साथी कताईके आग्रहके बारेमें कितने शिथिल हैं – इसका उन्हें खयाल आया | इससे उनके दिलको बड़ी चोट लगी | वे गंभीर बन गये और मनमें विचार करने लगे : "जो कार्यकर्ता डंकेकी चोट पर

लोगोंमें यह प्रचार करते हैं कि चरखेके बिना स्वराज्य नहीं मिलेगा, उनकी इस चरखा-भक्तिसे क्या लाभ? जिस टेक और श्रद्धाके लिए हम जीनेको और मरनेको तैयार न हों, वह टेक और श्रद्धा किस कामकी? यह झूठा आचरण है, निरी आत्म-वंचना है | सत्यका यह भंग उसकी हत्या कही जायगी |"

उसी दिन कुछ कार्यकर्ता गांधीजीसे मिलने आये | कहना एक बात और करना दूसरी बात – सत्यका यह मजाक गांधीजीको खटकता था | इसलिए उनके सामने भी गांधीजीने पूनीका ही सवाल छेड़ा | पर रचनात्मक कार्यकर्ता होते हुए भी वे गांधीजीको पूनी नहीं दे सके ! अपने साथियोंके ऐसे व्यवहारसे उनका पुण्य-प्रकोप जाग उठा | उनके मनमें विचार आया – मुझे खुश करनेके लिए ही ये लोग कातते मालूम होते हैं | इसलिए कार्यकर्ताओंके सामने अपने हृदयका दुःख उंडेलते हुए वे बोले :

"अगर मैं आप लोगोंसे यह मांग न करूं तो और किससे करूं? क्या श्रीनिवास शास्त्रीसे करूं? जिनका चरखेमें जरा भी विश्वास नहीं है, उनसे भला मैं क्या आशा रखूं? वे तो सच्चे हैं, ईमानदार हैं | जो कुछ वे कहते हैं वही करते हैं | बेईमानीका और झूठका आचरण तो हम लोग करते हैं, जो चरखेमें विश्वास रखते हुए भी उसका काम नहीं करते |"

इस सारे प्रसंगमें गांधीजीने साथियोंसे ज्यादा अपनेको ही दोषी माना | उनके साथी जब कोई दोष करते थे तब बहुत बार वे यही कहते थे कि "मेरी ही अहिंसा कच्ची होगी |" उनके मनमें यह मन्थन चल रहा था : "मैं खुद अगर चरखेके काममें इतना शिथिल होऊं तो दूसरे किसका दोष निकालूं? नमक यदि अपना खारापन छोड़ दे तो वह नमक कैसा?" पूनियां साथ न लेनेकी अपनी गलतीको उन्होंने सत्यकी उपासनामें विघ्न माना| परन्तु अपनी गलतीको कबूल करके फिरसे गलती न करनेका संकल्प करना आत्मशुद्धिका एक प्रकार है | सत्यको कलंक न लगे इस तरहके आचरण द्वारा अपनी आत्मशुद्धि करके ही गांधीजी इतने महान बने | गांधीजीको महापुरुष बनानेमें सबसे बड़ा हाथ सत्य-पालनकी उस सूक्ष्म और गहरी भावनाका ही था, जिसका उन्होंने अपने जीवनमें सतत विकास किया था |

७

गरमीमें ही मुझे पिघलने दीजिये

१९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलनके समय कांग्रेसके महान नेता अहमदनगरके किलेमें बन्द करके रखे गये थे | लॉर्ड वेवलने ३१ मासकी कैदके बाद उन्हें जेलसे रिहा किया था और राजनीतिक मंत्रणाके लिए सबको शिमला बुलाया था | वे जल्दी आ सकें इसके लिए रेलगाड़ीमें एक 'एयर कंडिशन्ड' डिब्बेकी भी खास व्यवस्था वाइसरॉयने की थी | उसी गाड़ीमें गांधीजी भी शिमला जा रहे थे | परन्तु उन्होंने तीसरे दर्जेके डिब्बेमें ही बैठना पसन्द किया था |

आनन्दसे पागल बनी हुई जनताके झुंडके झुंड हर स्टेशन पर गांधीजीका स्वागत करते थे | उसी गाड़ीमें एक अमेरिकन पत्र-प्रतिनिधि भी यात्रा कर रहे थे | लोगोंके झुंड प्रेम-दीवाने होकर गांधीजीको जो कष्ट पहुंचाते थे, वह अमेरिकन मित्रसे बरदाश्त नहीं होता था | इसलिए उन्होंने एक पत्र लिखकर गांधीजीसे प्रार्थना की : "दोपहरके बाद आप कांग्रेसी नेताओंके उस ठंडे डिब्बेमें यात्रा करें तो क्या गलत होगा? उसमें आप हाथ-पांव फेला कर अच्छी तरह आराम कर सकेंगे | पिछले २४ घंटेसे तो आप सो भी नहीं पाये हैं | नींदमें ऐसी बाधा पहुंचनेके कारण शिमला जाते जाते आप ऐसे परेशान हो जायेंगे कि वहां पहुंच कर आप राजनीतिक मंत्रणामें मददगार होनेके काबिल नहीं रह जायेंगे |"

गांधीजी : "आप इस कुदरतकी गरमीमें ही मुझे पिघलने दीजिये | इस गरमीके बाद कुदरती तौर पर ही ठंडक भी हो जायगी | और मैं उसका भी आनन्द लूंगा | कृपा करके मुझे सच्चे हिन्दुस्तानके सम्पर्कमें ही रहने दीजिये |"

अमीरोंके लायक आरामदेह ठंडे डिब्बेमें बैठ कर वे क्षणभरके लिये भी सच्चे हिन्दुस्तानके वातावरणसे दूर नहीं होना चाहते थे | ऐसी उबानेवाली और थकानेवाली यात्राके बावजूद शिमलामें एक क्षण भी बरबाद किये बिना स्नान और भोजनसे निबट कर वे लॉर्ड वेवलके पास मंत्रणाके लिए पहुंच गये |

वाइसरॉयने गांधीजीका स्वागत किया | गांधीजीने इस स्वागतका उत्तर विनोदमें दिया : "मैं भी आपके जैसा ही एक सैनिक हूं, परन्तु मैं हथियार नहीं रखता |"

ऐसे हास्य–विनोदके वातावरणमें दोनों राजनीतिज्ञ अपनी चर्चामें लीन हो गये |

८

सार्वजनिक व्यवहारके नियम

आम सभाओंमें कभी कभी वक्ताओंके मुंहसे ऐसी बातें सुननेको मिलती हैं, जो सुननेवालोंको पसन्द नहीं आती | ऐसे समय लोग बरदाश्त करनेकी अपनी शक्ति खो बैठते हैं, सभामें शोरगुल मचा देते हैं और वक्ताके लिए कुछ बोलना असंभव कर देते हैं | गांधीजीने समझ लिया था कि लोकशाहीके निर्माण और राष्ट्रके सार्वजनिक जीवनकी दृष्टिसे प्रजाकी ऐसी आदतें अच्छी नहीं कही जा सकतीं | इसलिए दूसरेके विचारोंको धीरजके साथ सुनने, उन्हें सहन करने और शान्त मनसे उन्हें समझनेकी आवश्यकता पर वे हमेशा जोर देते थे|

एक बार एक अधिवेशनमें गांधीजी, मुहम्मदअली जिन्ना, मौलाना मुहम्मदअली वगैरा नेता इकट्ठे हुए थे| एक प्रस्ताव पर चर्चा चल रही थी | उस प्रस्ताव पर अपने विचार प्रगट करनेके लिए जिन्ना साहब खड़े हुए | अपने भाषणमें गांधीजीके लिए उन्होंने 'मि॰ गांधी' शब्दका प्रयोग किया | गांधीजीको लोग श्रद्धा और भक्तिसे 'महात्मा गांधी' कहते थे | इसलिए उनके नामके साथ 'मिस्टर' शब्दका प्रयोग उन्हें अच्छा नहीं लगा | लोगोंमें से विरोधका स्वर सुनाई दे, इसके पहले ही मौलाना मुहम्मदअली बीचमें खड़े होकर बोले : " मिस्टर नहीं, महात्मा कहिये |"

मौलानाने लोगोंके मनकी बात कह दी | उन्हें जो चाहिए था वही मिल गया | सभामें से 'महात्मा गांधी कहिये' की आवाजें सुनाई पड़ने लगी | लेकिन जिन्ना साहब ऐसी आवाजोंसे घबरानेवाले नहीं थे | उन्होंने गांधीजीको 'महात्मा' कहनेसे इनकार किया और वे 'मिस्टर' शब्दसे ही चिपटे रहे | सभामें भारी शोरगुल मच गया | लोग भड़क उठे | उन्होंने जिन्ना साहबकी बात सुननेसे इनकार कर दिया |

सभापतिने लोगोंसे शान्त रहनेकी अपील की, लेकिन कोई नतीजा नहीं हुआ | अब उन्होंने सभाकी व्यवस्था टूटती देखी तो जिन्ना साहबको समझानेका प्रयत्न किया : लोगोंकी भावनाका खयाल करके आप गांधीजीके नामके पहले 'मिस्टर' के बदले 'महात्मा' शब्दका प्रयोग करें तो बड़ा अच्छा हो |" लेकिन लोगोंकी भावनाके सामने जिन्ना साहब एक इंच भी झुकनेको तैयार न थे |

सभापति सभाको काबूमें न रख सखे | सभामें धांधली मच गयी | गांधीजी खामोश बैठे बैठे यह सब देखते रहे | उन्हींके कारण सारा शोरगुल हो रहा है, यह बात उन्हें अच्छी नहीं लगी | अपने लिए जनताकी ऐसी अंधी भक्ति देखकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ | दूसरोंके विचारोंके लिए इतनी असहिष्णुता तथा सभामें अनुशासनकी इतनी कमी देखकर गांधीजी अकुला उठे | इसलिए वे बीचमें ही उठ खड़े हुए और लोगोंको उलाहना देते हुए बोले:

"मैं महात्मा नहीं हूं, लेकिन एक मामूली आदमी हूं | जिन्ना साहबके विचारोंकी स्वतंत्रतामें रुकावट डालकर आप मेरा सम्मान नहीं कर सकते | दूसरों पर अपने विचार जबरन् लाद कर हम स्वराज्य प्राप्त नहीं कर सकते | जब तक कोई आदमी शिष्ट और सभ्य भाषामें अपनी बात कहता है, तब तक हर किसीको दूसरोंके बारेमें अपनी राय देनेका अधिकार है |"

गांधीजीकी यह बात सुनकर लोग शान्त हुए और जिन्ना साहब अपना भाषण पूरा कर सके |

इस प्रसंगके कारण गांधीजीका महात्मा-पद अधिक चमक उठा | गांधीजी कितने नम्र हैं और दूसरोंके विचारोंका कितना आदर करते हैं, यह लोगोंने और गांधीजीके साथियोंने अपने सामने ही देखा | सार्वजनिक जीवनमें कैसे व्यवहार करना चाहिए, इसके नियम गांधीजीने ऐसे छोटे छोटे प्रसंगों द्वारा ही तैयार किये थे |

९
सेवाग्राममें गांधी-जयंती

भादों वदी बारसका दिन था | वह गांधीजीका जन्मदिन था | इसलिए सारा देश उस दिन गांधी-जयंती मना रहा था | गांधीजी सेवाग्राममें ही थे | इस बार उनकी हाजरीमें जयंती मनाई जानेवाली थी, इसलिए आश्रमवासी बड़े आनन्दमें थे | आश्रममें इस मौके पर एक विशेष कार्यक्रम रखा गया था | लेकिन उसमें किसी तरहकी धूमधाम या सजावट नहीं थी | जीवनको शुद्ध बनानेके लिए तथा सेवा-परायण जीवन जीनेके लिए आत्म-निरीक्षण करनेका वह पवित्र दिन था | सुबहकी प्रार्थनासे उस शुभ दिनका कार्यक्रम शुरु हुआ | उपवास, अखंड कताई, ग्राम-सफाई तथा शामकी प्रार्थनासे कार्यक्रम पूरा होनेवाला था |

आजकल अनेक छोटे-बड़े आदमी अपनी वर्षगांठ मनाते हैं | उसमें बधाईयां दी जाती हैं, उपहार दिये और लिए जाते हैं और खान-पानके जलसे रखे जाते हैं | गांधीजीने इस बातकी पहलेसे ही सावधानी रखी थी कि उनकी जयंतीके कारण समाजमें ऐसे गलत रीत-रिवाज न दाखिल हो जायं | इसलिए उन्होंने राष्ट्रसे अपील की थी कि उनकी जयंतीको गांधी-जयंती न कह कर चरखा-जयंती कहा जाय | और सारे राष्ट्रने उनकी यह बात स्वीकार कर ली थी | तबसे गांधी-जयंतीके दिन देशके लोग चरखेकी विशेष आराधना करते रहे हैं | गांधीजी बार बार कहते थे : "गांधीका नाम भले इस देशके लोग भूल जायें, परन्तु गरीबों और दिन-दु:खियोंकी सेवा करनेवाले चरखेको इस देशमें कभी न भूलना चाहिए |"

गांधीजीके मनमें हमेशा यह भावना बनी रहती थी कि उनका जन्मदिन गरीबों और दुखियोंकी उत्तम सेवाका कारण बने | इसलिए उस दिन थोड़ा भी गलत खर्च उन्हें बरदाश्त नहीं होता था | उस दिन कोई उन्हें फूलोंकी माला अर्पण करता, तो उसे भी वे स्वीकार नहीं करते थे | आश्रमके बालक या स्त्रियां श्रद्धा और भक्तिभावसे थोड़े फूल भी उनकी बैठकके पास रखकर उन्हें वन्दन करते, तो गांधीजी उन्हें भी मीठा उलाहना देकर कहते : "बापूका नाम भूल जाओ और चरखा चलाओ |"

उस दिन शामके कार्यक्रमके अनुसार सेवाग्रामके सारे आश्रमवासी प्रार्थनाके लिए इकट्ठे हुए थे | प्रार्थनाके बाद गांधीजी विशेष प्रवचन करनेवाले थे | गांधी-जयंतीका दिन होनेसे आसपासके ग्रामजन भी प्रार्थनामें शामिल हुए थे | गांधीजीके लिए एक उंची बैठक बनाई गयी थी | बैठकके आसपास कोई सजावट नहीं की गयी थी | केवल खादीकी सफ़ेद गादी और तकिया ही उसकी शोभा बढ़ा रहे थे | उसके सामने ही थोड़ी दूर पर समाईमें एक घीका दीपक जल रहा था |

गांधीजी प्रार्थनाके लिए आये | लोगोंको प्रणाम करके वे अपने आसन पर बैठे | हंसते हंसते उन्होंने अपने आसपास देखा | तब उनका ध्यान घीके दीपककी ओर गया | खुद जलकर जगतको प्रकाश देनेवाली बत्ती मानो गांधीजीके जीवनका प्रतीक हो, इस तरह मूक भावसे जल रही थी | गांधीजीने आंखें बन्द कीं और प्रार्थना शुरु हुई |

प्रार्थनाके बाद गांधीजी प्रवचन करनेवाले थे | परन्तु कुछ बोलनेसे पहले उन्होंने प्रश्न किया :

"यह समाई कौन लाया है ?

बा – मैं लायी हूं |

गांधीजी – कहांसे मंगाई है ?

बा – गांवमें से |

क्षणभर गांधीजी बाकी ओर देखते रहे | घीका दीपक जलाकर अपने पतिके आरोग्य और दीर्घ जीवनके लिए भगवानसे प्रार्थना करना हिन्दू पत्नीका परम धर्म है, ऐसा मानकर बाने खास तौर पर समाई मंगाकर दीपक जलाया था | गांधीजीने ऐसा प्रश्न क्यों पूछा, यह बाके भी समझमें नहीं आया |

बाका उत्तर सुनकर गांधीजी बोले : "आज अगर सबसे बुरा कोई काम हुआ हो तो यह हुआ कि बाने समाई मंगाकर उसमें घीका दीपक जलाया | वह क्या इसलिए जलाया गया है कि आज मेरा जन्मदिन है? सेवाग्रामके आसपासके गांवोंमें रहनेवाले लोगोंके जीवनको मैं रोज देखता हूं | उन बेचारोंको अपनी सूखी रोटी पर चुपड़नेके लिए पूरा तेल भी नहीं मिलता और मेरे आश्रममें आज घीका दिया जलता मैं देख रहा हूं|"

फिर बाकी ओर देखकर बोले : "इतने वर्ष मेरे साथ रहनेके बाद भी तुमने यही सिखा है? आज मेरा जन्म-दिवस है, पर इससे क्या हुआ? आज शुभ काम करना चाहिए, पाप नहीं | घीका दीपक जलाना पाप है | गरीब किसानोंको जो चीज नसीब नहीं होती, उसको हम इस तरह कैसे बरबाद कर सकते हैं?"

घीके दीपकके बारेमें इतनी बात कहनेके बाद उन्होंने अपना प्रवचन पूरा किया | परन्तु बापूके ये शब्द बा जीवनभर नहीं भूलीं |

गांधीजी सदा यह मानते थे कि किसानोंका सुख मेरा सुख और किसानोंका दुःख मेरा दुःख है | उनकी यह अटल श्रद्धा थी कि चरखा किसानोंका दुःख दूर करनेमें सफल होगा | इसीलिए वे चरखेको किसानकी कामधेनु – मनकी हर इच्छा पूरी करनेवाली गाय – कहते थे |

१०
वे भव्य वचन

भारतकी जनताके साथ अपना सम्बन्ध बढ़ानेके लिए गांधीजीने कई बार सारे देशकी यात्रा की थी | एक बार भारतसे बाहर वे लंका भी गये थे | लंकामें वे जहां जहां गये वहीं 'महात्मा गांधीकी जय' के हर्षनादसे लोगोंने उनका हार्दिक स्वागत किया |

परन्तु एक जगह गांधीजीकी राह देख रहे एक जन-समूहने 'माताजी आयीं, माताजी आयीं' के नारे लगाये | उनका ऐसा खयाल था कि गांधीजीके साथ उनकी माताजी भी आयी हैं | उस समूहके आगे एक अंग्रेज महिला थी | वह गांधीजीकी मोटरके पास घुस आयी और मोटरको पकड़कर थोड़ी दूर उसके साथ दौड़ी भी | उसके आनन्दका पार नहीं था | मोटरको छोड़ देनेके बाद उसने गांधीजी जैसे महापुरुषकी माताके जीभर दर्शन करनेका संतोष प्रकट किया | गांधीजी समझ गये कि लोग कस्तूरबाको गलतीसे मेरी मां समझ रहे हैं | लेकिन वे खामोश बैठे रहे | 'माताजी आयीं' के नारे वे सुनते जाते थे और मुस्कुराते हुए लोगोंको प्रणाम करते जाते थे |

गांधीजीका स्वागत करनेवाले सज्जन भी इस भूलसे मुक्त नहीं थे | कस्तूरबाकी पहचान भी सभाको उन्होंने गांधीजीकी माताके नामसे ही कराई | मिलते समय गांधीजीसे उन्होंने पूछा : "आज आप कस्तूरबाको साथ क्यों नहीं लाये?" अब गांधीजीको लगा कि कस्तूरबाके विषयमें लोगोंमें फैले हुए भ्रमकी हद हो गयी है |

लोगोंका यह भ्रम दूर करनेका मौका वे ढूंढ ही रहे थे | यह मौका उन्हें स्वागतका जवाब देते समय मिल गया | लोगोंको हंसानेके बजाय उन्होंने विवाहित जीवनका ऊँचेसे ऊँचा आदर्श उनके सामने रखा और उस पर गहरा विचार करनेकी प्रेरणा दी |

वे बोले : "मेरी पहचान करानेवाले सज्जनसे थोड़ी भूल हो गयी | मेरे साथ मेरी माता नहीं परन्तु मेरी पत्नी आयी है | कस्तूरबाको मेरी मां समझनेमें उनका दोष नहीं है | उनसे भूल जरूर हो गयी | लेकिन एक मानीमें उनका कहना सच है | कुछ बरसोंसे कस्तूरबा मेरी पत्नी मिट गयी हैं | मैं उन्हें माताकी दृष्टीसे ही देखता आया हूं | इस बातको हम दोनोंने अपनी इच्छासे स्वीकार किया है | . . .स्त्री-पुरुष दोनों इसके रहस्यको समझेंगे तो सुखी होंगे | मानव-जीवन भोग भोगनेके लिए नहीं बल्कि कर्म करनेके लिए है |"

विवाहित जीवनमें स्त्रीके अनूठे स्थानके बारेमें बापूजीके ये वचन कितने भव्य थे | ऐसे ऊँचे विचार प्रकट करने और उनके अनुसार जीवन बितानेका प्रयत्न सदा कितने लोग करते होंगे और दुनियामें कितनोंको उसमें सफलता मिलती होगी?

११
यह शरीर लोकसेवाके लिए है

गांधीजी हमेशा सुबह-शाम घूमने निकला करते थे | यह उनका नियम-सा बन गया था | एक बार वे घूमने निकले | घूमते घूमते उनको ठोकर लगी और पांवके अंगूठेसे खून निकलने लगा | गांधीजीके साथ कस्तूरबा भी घूम रही थीं | अंगूठेसे खून निकलता देख गांधीजी बोले:

"बा, तुरंत पट्टी लाकर मेरे अंगूठे पर बांध दो |"

पट्टी बांधनेके बारेमें गांधीजीकी घबराहटको देखकर बाने विनोद किया : "आप तो कहते हैं कि आपको मृत्युका भी डर नहीं है | तब यह मामूली ठोकर लगने और थोड़ा खून निकलनेसे आप इतने घबरा क्यों गये?"

बाके इस विनोदका गांधीजीने गंभीरतासे जवाब दिया : "इस शरीरके सच्चे मालिक हिन्दुस्तानके लोग हैं| मेरी लापरवाहीसे अंगूठेके घावमें पानी चला जाय और वह पक जाय, तो ७-८ दिन तक काम करना मेरे लिए कठिन हो जाय | इससे लोगोंको कितना नुकसान होगा? ऐसा करनेसे हिन्दुस्तानकी जनताने हम पर जो विश्वास रखा है उसका भंग होगा |"

बाको खयाल भी नहीं था कि गांधीजी ऐसी बात कहेंगे | वे एकदम शरमिन्दा हो गयीं | और तुरंत पट्टी लाकर उन्होंने गांधीजीके अंगूठे पर बांध दी |

जनताके हितकी गांधीजीको कितनी चिन्ता रहती थी | वे हमेशा मानते थे कि यह शरीर आत्माका मन्दिर है और लोगोंकी सेवाके लिए ही उसका उपयोग होना चाहिए | इसी खयालसे शरीरकी संभाल करनी चाहिए, ताकि वह सेवाधर्मके पालनमें हमारा पूरा साथ दे सके |

१२
पोशाकमें क्रान्ति

गांधीजी घुटने तकका कच्छ पहनते थे | परन्तु उनकी पोशाकमें यह परिवर्तन धीरे धीरे हुआ था | इंग्लैंडमें जब वे विद्यार्थीके रूपमें बैरिस्टरीकी शिक्षा ले रहे थे, तब कोटपतलून और नेकटाईमें साहेबी ठाठसे रहते थे | बैरिस्टर बननेके बाद भारतमें और दक्षिण अफ्रीकामें भी कुछ समय तक उनकी यही पोशाक रही | रस्किन और टॉलस्टॉयके विचारोंसे प्रभावित होनेके बाद दिनों-दिन गांधीजीका जीवन सादा बनता गया | इसका असर पोशाक पर भी पड़ा | सत्याग्रहीके रूपमें पहली ही बार दक्षिण अफ्रीकामें कोटपतलून छोड़कर उन्होंने कुर्ता और पायजामा पहनना शुरु किया | मद्रासियोंके बीच रहनेसे उनके जैसी लुंगी भी वे पहनते थे |

दक्षिण अफ्रीकासे भारत लौटनेके बाद उन्होंने मूल काठियावाड़ी पोशाक पसंद की | काठियावाड़ी लम्बा साफा, अंगरखा, कमीज, गलेमें दुपट्टा और पांवकी एढी तक पहुंचनेवाली लम्बी धोती पहनकर वे सारे देशमें घूमने लगे | खादीके जन्मके बाद ये सब कपड़े मिलके न रह कर खादीके हो गये |

एक बार गांधीजी रेलके तीसरे दर्जेमें यात्रा कर रहे थे | रास्तेमें जब गाड़ीमें भीड़ कम हुई, वे पास बैठे एक यात्रीसे बातें करने लगे | खादीकी चर्चा चली | अन्तमें उन्होंने यात्रीसे पूछा : "आप खादी क्यों नहीं पहनते?"

महंगी खादी कैसे पहनी जाय, ऐसा सोचकर यात्रीने जवाब दिया : "खादी पहननेकी बात आप कहते हैं? आपके जितने खादीके कपड़े हम पहनें तब तो हमारा दिवाला ही निकल जाय !"

यात्रीके ये वचन गांधीजीको तीरकी तरह चुभ गये | अपनी पोशाकके बारेमें वे गहरा विचार करने लगे | इतने लम्बे साफेकी क्या जरूरत है? इतने कपड़ेमें तो १५-२० टोपियां बन सकती हैं | गलेका दुपट्टा केवल शोभाकी चीज है| इसे छोड़ देना चाहिए | अंगरखेकी जगह कुर्तेसे और लम्बी धोतीकी जगह छोटी धोतीसे काम चल सकता है |

इस गहरे विचारके बाद तुरन्त ही गांधीजीकी पोशाकमें परिवर्तन हुआ | और काठियावाड़ी पोशाक छोड़कर वे टोपी, कुर्ता और छोटी धोती पहनकर सारे देशकी यात्रा करने लगे |

एक बार यही पोशाक पहनकर वे दिल्लीमें वाइसरॉयसे मिलने गये थे | उस जमानेमें अंग्रेजी पोशाकका ऐसा बोलबाला था कि इस तरहकी सादी पोशाकमें वाइसरॉयसे मिलनेकी कोई हिम्मत ही नहीं कर सकता था | गांधीजीको ऐसी पोशाकमें देखकर वाइसरॉयको बड़ा आश्चर्य हुआ | वे बहुत झुंझलाए, मन ही मन कुढ़ते रहे | अन्तमें बिदाईके समय अपनी यह नाराजी उन्होंने प्रकट कर ही दी |

भारतकी गरीबीका चित्र वाइसरॉयके सामने रखनेका मौका मिल गया, इसलिए गांधीजी बोले : "अगर आप भारतके करोड़ों गरीबोंको कमसे कम इतने ही कपड़े मिलनेका वचन दें, तो मेरी पोशाकमें परिवर्तन करनेके आपके प्रस्ताव पर मैं विचार कर सकता हूं |"

गांधीजीके इस उत्तरमें अंग्रेजोंकी शोषण-नीतिसे कंगाल बने हुए भारतका करुण चित्र था | वाइसरॉय इस इशारेको समझ गये | इसलिए उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया |

यह सादी पोशाक भी गांधीजी लम्बे समय तक नहीं पहन सके | जब असहयोगका सन्देश फैलानेके लिए वे सारे देशकी यात्रा कर रहे थे तब घूमते घूमते वे मद्रास प्रान्तमें भी गये | वहां मजदूरोंकी एक सभामें विदेशी कपड़ोंकी होली जलानेकी बात समझाते हुए उन्होंने कहा : "आपके पास जो भी विदेशी कपड़े हों उन्हें आज ही आप जला डालिये |"

यह बात सुनकर एक फटेहाल मजदूरने गांधीजीसे पूछा : "महात्माजी, आपकी बात तो सच है | लेकिन हमारे पास तो एक ही कपड़ा तन पर है | उसे अगर जला दें तो हम पहनें क्या ?"

इस प्रश्नमें गांधीजीको भारतकी दरिद्रताका, उसकी कंगालीका एक नया ही दर्शन प्राप्त हुआ | मजदूरोंकी गरीबीने उनके हृदयको जड़से हिला दिया | इस प्रश्नका वे कोई उत्तर न दे सके | हृदयका मन्थन फिर आरम्भ हुआ : "इस गरीब देशमें इतने ज्यादा कपड़े पहननेका मुझे क्या अधिकार है?"

उस दिन उन्हें एक महान सत्यकी प्रतीति हुई | डेरे पर जाकर राजाजी तथा अन्य साथियोंके सामने अपना यह निर्णय बताकर उन्होंने मनका बोझ हलका किया :

"आजसे मैं केवल कच्छमें ही रहूंगा ! बहन-बेटियोंकी मर्यादा निबाहनेके लिए घुटनों तकका कच्छ पहनूंगा |"

इस तरह पोशाककी यह क्रान्ति आखिरी हद तक पहुंच गयी | दूसरे दिन गांधीजीको स्त्रियोंकी एक सभामें जाना था | राजाजीने उनसे कहा: "बापू, यह पोशाक असभ्य कही जायगी | इसे पहनकर आप स्त्रियोंकी सभामें कैसे जायेंगे?"

गांधीजी – (मुसकुराकर) "बहनें मुझे अच्छी तरह जानती हैं |"

गांधीजीकी दृष्टिमें भारतकी सभ्यताका माप कुछ और ही था |

चर्चिलने कच्छधारी गांधीजीको 'अधनंगा फकीर' कहा था | परन्तु गांधीजीका यह कच्छ भारतकी गरीबीका एक प्रतीक बन गया था | उनका शरीर सरदी-गरमीका ऐसा आदी हो गया था कि इंग्लैंडकी सरदीमें

भी उन्होंने अपना हमेशाका कच्छ ही पहना था | वहांके बालकोंको यह पोशाक अजीब मालूम होती थी | इसलिए एक नटखट बालकने गांधीजीसे पूछा: "गांधी काका, आपका पतलून कहां है ?"

गांधीजी खिलखिला पड़े |

परन्तु अखबारोंके प्रतिनिधियोंने जब उनके इतने कम कपड़ोंकी ओर इशारा किया, तब गांधीजीने विनोदमें कहा: "यह तो बिलकुल स्वाभाविक बात है | आपकी पोशाकमें जरूरतसे चार कपड़े ज्यादा हैं और मेरी पोशाकमें चार कपड़े कम हैं | यह क्या कोई बड़ा फर्क हो गया ?"

गोलमेज परिषदके समय गांधीजी इंग्लैंड गये थे | उस समय वहांके राजा जॉर्ज पंचमने बकिंघम महलमें मिलने आनेका उन्हें निमंत्रण दिया | वहांके रिवाजके मुताबिक काला कोट, काले बूट, धारीदार पतलून और सफेद कमीजकी राजमान्य पोशाक पहनकर ही राजासे मिला जा सकता था | इसलिए गांधीजीने वहां जानेसे इनकार कर दिया | उन्हें समझाया गया : "इसमें आपकी पसन्दके लिए कोई गुंजाईश नहीं है | राजाका निमंत्रण राजाका हुक्म ही होता है | उसे तो आपको मानना ही पड़ेगा |"

इस दलीलका गांधीजी पर बहुत असर नहीं हुआ | उन्होंने कहा : "राजासे मिलनेका सम्मान मिले तो भी मैं अपनी पोशाकमें कोई परिवर्तन नहीं करूंगा |"

आखिर परदेकी आड़में कुछ हो गया और राजाने पोशाकके बारेमें अपना आग्रह छोड़ दिया | गांधीजी भारतकी प्रजाके सच्चे प्रतिनिधिके रूपमें कच्छ पहनकर ही बकिंघम महलमें राजासे मिलने गये |

इस पुराने रिवाजके टूटनेसे कुछ दुखी हुए एक पत्रकारने गांधीजीसे पूछा : "गांधी, यह पोशाक पहनकर शाही महलमें प्रवेश करते समय आपको किसी तरहकी परेशानी या हिचकिचाहट नहीं मालूम हुई ?"

पत्रकारका प्रश्न सुनकर गांधीजी जोरसे हंस पड़े और बोले : "मुझे किसलिए परेशानी हो? हम दोनोंके काम आ जायं इतने कपड़े तो राजा वहां पहनकर ही बैठे थे |"

गांधीजीकी पोशाकमें धीरे धीरे जो क्रान्ति हुई उसका यह इतिहास है | भारतकी गरीब और दुखी जनताके साथ एकरूप होनेकी जो तमन्ना और आतुरता गांधीजीके हृदयमें हमेशा बनी रहती थी, उसीके दर्शन हमें उनकी इस पोशाकमें होते हैं | उस आतुरताके कारण वे वाइसरॉय या इंग्लैंडके राजाके सामने राजमान्य पोशाक पहनकर जानेकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे | इस पोशाकके द्वारा ही भारतकी सभ्यता गांधीजीमें साकार बनी थी और हमारी संस्कृतिका सार उनमें प्रकट हुआ था | कच्छ उन्हें इसलिए सुझा कि वह भारतकी वर्तमान स्थितिके अनुकूल था और उसकी शोभा बढ़ानेवाला था | परन्तु पोशाकमें यह क्रांति करनेकी प्रेरणा गांधीजीको उनके अपरिग्रह और सादगीके व्रतोंने ही दी थी |